प्रातः क्लास 6/1/69 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। मीठे–मीठे सिकीलधे बच्चे यह तो समझते हैं इस पुरानी दुनियां में हम अब थोड़े दिन के मुसाफिर हैं। दुनियां के मनुष्य तो समझते हैं अजुन 40 हजार वर्ष यहां रहने का है। तुम बच्चों को तो निश्चय है ना। यह बातें भूलो नहीं। यहां बैठे हो तो भी तुम बच्चों को अन्दर में बहुत गद2 होना चाहिए। इन आँख(ों) से जो कुछ देखते हो यह तो विनाश होने का है। आत्मा तो अविनाशी है। यह भी बुद्धि में है हम आत्मा ने 84 जन्म पूरे किये हैं। अभी बाप आया है ले जाने लिये। पुरानी दुनियां जब पूरी होती है तब ही बाप आते हैं नई दुनियां बनाने। नई दुनियां से पुरानी, फिर पुरानी दुनियां से नई दुनियां इस चक्र का तुम्हारे बुद्धि में ज्ञान है। अनेक बार हमने चक्र लगाया है। अभी यह चक्र पूरा होता है। फिर नई दुनियां में हम थोड़े देवताएं ही रहते हैं। मनुष्य नहीं होंगे। अभी हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। यह तो पक्का निश्चय है ना बाकी कर्मों पर मदार है। मनुष्य उल्टा काम करते हैं तो वह अन्दर में खाता जरूर है। इसलिये बाप पूछते इस जन्म में ऐसे कोई पाप कर्म तो नहीं किये हैं। यह है ही छी छी रावण राज्य। यह भी तुम समझते हो दुनियां नहीं जानती कि रावण किस चीज का नाम है। बापू जी भी कहते थे रामराज्य चाहिए; परन्तु अर्थ नहीं समझते थे। कहते थे राम राज्य चाहिए; परन्तु रामराज्य क्या होता है वह अर्थ नहीं समझते (थे)। अभी बेहद का बा(प) समझाते हैं रामराज्य किस प्रकार का होता है। यह तो धुंधकारी दुनियां है। अभी बेहद का बाप तुम बच्चों को वरसा दे रहे हैं। अभी तुम भक्ति करते हो। भक्ति के अंधियारे रात में तुम धक्के खाते रहते थे। अभी बाप का हाथ मिला है। बाप के सहारे बिगर तुम विषय वैतरणी नदी में गोते खाते रहते थे। गुरू गुसाई आदि सभी गोता ही खिलाते रहते हैं। आधा कल्प है ही भक्ति। ज्ञान मिलने से तुम नई दुनियां सतयुग में चले जाते हो। अभी तुम बच्चों को यह निश्चय है। हम बाबा को याद करते2 पवित्र बन जावेंगे। फिर पवित्र राज्य में आवेंगे। यह ज्ञान भी अभी तुमको पुरूषोत्तम संगम युग पर ही मिलता है। यह है पुरूषोत्तम संगम युग जबकि तुम छी छी से गुलगुल, कांटों से फूल बन रहे हो। कौन बनाते हैं? बाप। बाप को भी जाना है। हम आत्माओं का वह बेहद का बाप है। लौकिक बाप को बेहद का बाप नहीं कहेंगे। पारलौकिक बाप आत्माओं (के) हिसाब से सभी का बाप है। फिर ब्रह्मा का भी आक्युपेशन चाहिए ना। तुम बच्चे सभी के ऑक्युपेशन जान गये हो। विष्णु के भी आक्युपेशन को जानते हो। शुट(सूत) कितना मँझा हुआ है। स्वर्ग का मालिक है ना। यह तो .... का ही कहेंगे। मूल वतन, सूक्ष्म वतन, स्थूल वतन। वह भी संगम में आते हैं ना। तो अभी बाप बैठ समझाते पुरानी दुनियां और नई दुनियां का यह संगम है। पुकारते भी अभी हैं कि पतितों को पावन बनाने वाले आअ(ो)। पावन दुनियां नई दुनियां और पतित दुनियां है पुरानी दुनियां। यह भी जानते हो बेहद के बाप का भी पार्ट है। क्रियटर डायरेक्टर है ना। सभी जानते हैं, तो जरूर उनकी कोई एक्टिविटी तो होगी ना। सभी जानते उनको आदमी नहीं कहा जाता। उनको तो अपना शरीर ही नहीं है। बाकी सभी को या मनुष्य या देवता कहेंगे। शिवबाबा को न देवता न मनुष्य कह सकते हैं। क्योंकि उनको शरीर ही नहीं है। यह तो टेम्परीरी लि(या)। गर्भ से थोड़े ही पैदा हुआ है। खुद कहते हैं मीठे बच्चों को शरीर बिगर राजयोग कैसे सिखाऊंगा। हमको लोग भल कह देते हैं ठिक्कर भित्तर में परमात्मा है; परन्तु अभी तो तुम समझते हो ना कैसे मैं आता हूं। अभी तुम राजयोग सीख रहे हो ना। कोई मनुष्य तो सिखला न सके। देवताएं हैं राजयोगी। यह कैसे बने। जरूर (पुरूषो)त्तम संगम पर ही राजयोग सीखे होंगे। तो अभी तुम बच्चों को अथाहखुशी होनी चाहिए। यह सुमिरण कर हमने अभी 84 का चक्र पूरा किया है। बाप कल्प2 आते हैं। बाप खुद कहते हैं यह बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। श्रीकृष्ण जो प्रिन्स था सतयुग का वही फिर 84 जन्मों का चक्र लगाते हैं। तुम शिव के तो 84 जन्म नहीं बतावेंगे। श्रीकृष्ण ही गोरा था फिर सांवरा बना। सूर्यवंशी फिर चन्द्रवंशी ..... बना। अभी ब्राह्मण कुल में हैं। यह बातें दुनियां में और कोई की बुद्धि में नहीं हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार

जानते हैं। माया बहुत कड़ी है। किसको भी छोड़ती नहीं है। बाप को सभी मालूम पड़ता है। माया ग्राह एकदम हप कर लेती है। यह बाप अच्छी रीत जानते हैं। ऐसे मत समझो बाप कोई अर्न्तयामी है। नहीं। सभी की एक्टविटी से जानते हैं। समाचार आते हैं। माया एकदम कच्चे ही पेट में डाल लेती है। ऐसे बहुत बातें तुम बच्चों को मालूम नहीं पड़ती हैं। बाप को तो सभी मालूम पड़ता है। मनुष्य फिर समझते हैं अर्न्तयामी है। बाप कहते हैं मैं अन्तर्यामी हूं नहीं। हरेक की चलन से सभी मालूम पड़ता है। बहुत ही छी छी चलन चलते हैं। बाप बच्चों को खबरदार करते हैं माया से सम्भालना है। माया ऐसी है जो किस न किस रूप में हप कर लेती है। फिर भल बाप समझाते हैं तो भी बुद्धि में नहीं बैठता है। इसलिये बच्चों को तो बहुत ही खबरदार रहना है। काम तो महाशत्रु है। मालूम भी न पड़े कि हम विकार में गये हैं। ऐसे भी होता है। इसलिये बाप कहते हैं कुछ भी भूल आदि होती है तो साफ बता दो। छिपाओ मत। नहीं तो सौगुणा पाप हो जावेगा। वह अन्दर में खाता रहेगा। वृद्धि होती रहेगी। एकदम गिर पड़ेंगे। बच्चों को बाप के साथ बिल्कुल ही सच्चा रहना चाहिए, नहीं तो बहुत2 घाटा है। माया इस समय तो बहुत कड़ी है। यह रावण की दुनियां है। हम इस पुरानी दुनियां को याद ही क्यों करें। हम तो नई दुनियां को याद करेंगे, जहां अभी जा रहे हैं। बाप नया मकान आदि बनाते हैं तो बच्चे समझते हैं ना हमारे लिये मकान बन रहा है। खुशी रहती है। यह है बेहद की बात। हमारे लिये नई दुनियां स्वर्ग बन रहा है। स्वर्ग में जरूर मकान भी होंगे रहने लिये। अभी हम नई दुनियां में जाने वाले हैं। जितना बाप को याद करेंगे उतना ही गुल2 फूल बनेंगे। हम विकारों के वश हो कांटे बन गये हैं। बाप जानते हैं माया आधों को एकदम खा जाती है। तुम भी समझते हो। जो नहीं आते हैं तो वह माया के वश हो गये हैं। बाप के पास .... है नहीं। ट्रेटर बन गये। पुराने दुश्मन पास चले गये। ऐसे बहुतों को माया हप कर लेती है। चित्र कितने गाये कितने लगावेंगे। यहां तो बेहद की बात है। कौन बैठ इतना रोज2 देखेंगे। कितने खत्म हो जाते हैं। बहुत (अ)च्छे–2 कह के जाते हैं हम ऐसे करेंगे, यह करेंगे हम तो यज्ञ के लिये प्राण भी देने लिये तैयार हैं। आज (व)ह हैं नहीं। सभी क्लासेज में से माया आधों को हप कर जाती है। तुम्हारी लड़ाई है ही माया के साथ। दुनियां (में) यह कोई नहीं जानते हैं। माया के साथ लड़ाई कैसे होती है। शास्त्रों में फिर दिखाया है देवताओं और असुरों (की) लड़ाई हुई। फिर दिखाते हैं कौरव और पाण्डवों की लड़ाई। कोई से पूछो यह दो बातें शास्त्रों में कैसे हैं देवताएं (तो) अहिंसक होते हैं। वह होते ही हैं सतयुग में। उन्हों की फिर असुरों से लड़ाई कैसे होगी। कोई की बुद्धि में ...ता नहीं है। अभी तुम बच्चों को बाप ने ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है। लड़ाई की तो बात हो नहीं सकती। (कौर)व और पाण्डव का भी अर्थ नहीं समझते हैं। शास्त्रों में जो लिखा है वह पढ़ते सुनाते रहते हैं। बाबा की तो .... गीता पढ़ी हुई है। जब यह ज्ञान मिला तो विचार चला गीता में यह लड़ाई आदि की बातें क्या लिखी हैं। कृष्ण भी तो गीता का भगवान नहीं। गीता हाथ में थी। गुस्सा आया और गीता को एकदम फेंक दिया। .... तो झूठा शास्त्र है। इनके अन्दर बाप बैठा था तो इन द्वारा गीता को एकदम फेंक दिया। बोला, अभी .... भी नहीं लगाओ, नहीं तो सारी गीता ही पढ़ते आये। अभी समझते हैं भक्ति में कितना अंधियारा है। अभी कितना सोझरा देते हैं। आत्मा को ही देते हैं तब बाप कहते हैं अपन को तुम आत्मा समझो। बेहद बाप को याद करो। भक्ति में तुम याद करते थे ना। कहते थे आप आवेंगे तो बलिहार जावेंगे; परन्तु वह .... ग, कैसे बलिहार जावेंगे यह थोड़े ही जानते थे। अभी तुम समझते हो जैसे हम आत्मा हैं वैसे बाप भी है। बाप ..... है अलौकिक जन्म। तुम बच्चों को कैसे अच्छी रीत पढ़ाते हैं। तुम खुद कहते हो यह तो वही बाप है जो कल्प2 ..... बाप बनते हैं। हम सभी बाबा2 कहते हैं। बाप भी बच्चे2 कहते हैं। वही टीचर रूप में राजयोग सिखलाते (और) तो कोई राजयोग सिखला न सके। विश्व का तुमको मालिक बनाते हैं। तो ऐसे बाप का बनकर फिर उसी से शिक्षा भी लेनी चाहिए। गद–2 होना चाहिए। अगर छी छी बने तो खुशी आवेगी ही नहीं। भल कितना माथा मारे। वह फिर हमारे जात–भाई नहीं। यहां कितने सरनेम होते हैं मनुष्यों की। वह सभी हैं हद की बातें (तुम्हारा) सरनेम तो देखो कितना बड़ा है। बड़े ते बड़ा ग्रैन्ड फादर ब्रह्मा। उनको कोई जानते ही नहीं।

शिवबाबा को तो सर्वव्यापी कह देते। कुत्ते बिल्ले में ठोक दिया है। ब्रह्मा का भी किसको पता नहीं पड़ता। चित्र भी है ब्रह्मा–विष्णु–शंकर के। ब्रह्मा को सूक्ष्मवतन में ले गये हैं। बायोग्राफी कुछ भी नहीं जानते। सूक्ष्म वतन में फिर प्रजापिता ब्रह्मा कहां से आवेगा। वहां एडॉप्ट करेंगे क्या। किसको भी पता नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा कहते हैं; परन्तु बायोग्राफी कुछ भी नहीं जानते हैं। ब्रह्मा कहां से आया वह भी कुछ नहीं जानते हैं। बाप ने समझाया है यह हमारा रथ है। बहुत जन्मों के अन्त में हमने यह आधार लिया है। यह पुरूषोत्तम संगम युग गीता का एपिसोड है। पवित्रता भी मुख्य है। पतित से पावन कैसे बनना है यह दुनियां में किसको भी पता नहीं है। साधु–सन्त आदि कभी ऐसे नहीं कहेंगे कि देह सहित देह के सभी धर्मों को भूल एक बाप को याद करो। तो माया के पाप–कर्म सभी भस्म हो जावेंगे। ऐसे कब नहीं कहेंगे। बाप को ही नहीं जानते हैं। अर्थ ही उल्टा कर देते हैं। लज्जा नहीं आती है! गीता में बाप ने कहा है इन साधुओं आदि का भी मैं उद्धार करता हूं। क्योंकि सभी दुर्गति में हैं। फिर सद्गति स्वर्ग में कौन ले जावेंगे। नाम कितने बड़े2 रखाते हैं। आगे तो टाईटल बिकता था। रायबहादुर आदि का टाईटल लेने 50 हजार देते थे। पैसे से जो चाहे सो मिल सकता था। तो बाप बैठ समझाते हैं शुरू से लेकर इस समय तक यह अभी है अन्त का जन्म। यही ब्रह्मा बनता है। छोटेपन में गांवड़े का छोरा था। 84 जन्म भी इसने लिये है ना। फर्स्ट से लेकर लास्ट तक। तो नई दुनियां सो फिर पुरानी हो जाती है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि का ताला खुला है। तुम समझ सकते हो। धारण कर सकते हो। अभी तुम बुद्धिवा(न)(ब)ने हो। आगे बुद्धिहीन थे। यह ल0ना0 बुद्धिवान और यहां हैं बुद्धिहीन। सामने देखो यह पैराडाइज के मालिक हैं ना। कृष्ण स्वर्ग का मालिक था फिर गांवड़े का छोरा बना है। तो तुम बच्चों को यह धारण कर फिर पवित्र भी जरूर बनना है। मुख्य है ही पवित्रता की बात। लिखते भी हैं बाबा माया ने हमको गिरा दिया। आँखें क्रिमनल बन गईं। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। बस, अभी घर जाना है। बाप को याद करना है। थोड़े टाइम लिये, शरीर निर्वाह लिये कर्म कर फिर हम चले जाते हैं। इस पुरानी दुनियां के विनाश लिये लड़ाई भी लगनी है। यह तुम देखना कैसे लगती है। बुद्धि से समझते भी हैं हम देवता बनते हैं तो हमको नई दुनियां जरूर चाहिए। इसलिये विनाश भी जरूर होगा। हम अपनी नई दुनियां स्थापन कर रहे हैं श्रीमत पर। बाबा नहीं स्थापन करते (हैं)। बाबा पतित थोड़े ही हैं जो योग लगाकर पावन बनेंगे। नहीं। तुम बच्चे पतित बन पावन बनते हो। तुम ही पावन दुनियां बनाते हो। बाप कहते हैं मैं तुम्हारे सेवा में उपस्थित होता हूँ। तुमने मांगनी की है कि हम पतितों को आकर पावन बनाओ। तो तुम्हारे ही कहने से मैं आया हूं। तुमको रास्ता बताता हूँ बहुत सहज। मन्मनाभव। भगवानुवाच है ना। सिर्फ़ कृष्ण का नाम दिया है। बाप के नेक्स्ट (दूसरा नम्बर) है कृष्ण। वह परमधाम का मालिक। तो यह विश्व का मालिक। सूक्ष्मवतन में तो कुछ होता ही नहीं है। सभी से नम्बरवन है श्री कृष्ण। जिसको बहुत प्यार करते हैं। बाकी तो पीछे2 आये हैं। स्वर्ग में तो सभी जा भी न सकें। तो तुम मीठे2 बच्चों को हड्डी खुशी रहनी चाहिए। आर्टीफीशियल खुशी नहीं चल सकती। बाहर से किसम2 के बाबा के पास आते ....। कब पवित्र नहीं रहते। बाबा समझाते थे विकार में जाते हो फिर आते ही क्यों हो। कहते थे क्या करें रह नही सकता हूँ। रोज जाता हूँ; परन्तु यहां आता हूँ शायद कभी कोई तीर लग जाये। आप बिगर हमारी सद्गति और कौन करेगा। आकर बैठ जाते थे। माया कितनी प्रबल है। निश्चय भी होता है बाबा हमको पतित से पावन गुल–2 बनाते हैं; परन्तु क्या करें माया बड़ी प्रबल है। फिर भी सच्च तो बोलता था ना। अभी वह जरूर सुधर गया होगा। उनको यह निश्चय था इन द्वारा ही हम सुधरेंगे। अभी अगर मैं दिल्ली में जाऊं सभा में पूछूँ वह कौन था? तो निकल भी आवे। होवे या न भी हो। अनेक फीचर्स होते हैं। इस समय कितने एक्टर्स हैं। एक की फीचर्स न मिले दूसरे से। फिर कल्प बाद यही फिचर्स .... पार्ट रिपीट करेंगे। आत्माएं तो सभी फिक्स हैं। 500 करोड़ एक्टर्स हैं। बिल्कुल एक्युरेट पार्ट बजाते रहते हैं। कुछ भी फर्क नहीं हो सकता। सभी आत्माएं अविनाशी हैं। उनमें पार्ट भी अविनाशी नुँधा हुआ है। कितनी समझने की बातें हैं। इतना समझाते हैं फिर भी भूल जाते हैं। हर कल्प राजाई तो स्थापन होती ही है। सतयुग आते थोड़े हैं सो भी नम्बरवार। एक का पार्ट दूसरा जान नहीं सकता। अच्छा, ओम। गुडमॉर्निंग।